BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

"उत्तराखंड की लोक कला ऐपण का टेक्सटाइल डिजाइन में योगदान : सांस्कृतिक धरोहर से समकालीन डिजाइन की ओर"

पूजा पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक
चित्रकला विभाग
सरदार महिपाल राजेन्द्र जनजातीय (पी0जी0) कॉलेज
साहिया, देहरादून, उत्तराखंड

सारांश–

उत्तराखंड की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर में ऐपण कला का एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह कला सदियों से उत्तराखंड के विभिन्न समुदायों और परिवारों द्वारा अपने धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यक्रमों में प्रयोग की जाती रही है। ऐपण में पारंपरिक रूपांकनों और प्रतीकों का उपयोग किया जाता है, जो आमतौर पर दरवाजों, दीवारों और पूजा स्थलों पर सजावट के रूप में बनाए जाते हैं। इन पारंपरिक डिजाइनों में प्रकृति, धार्मिक प्रतीक और ज्यामितीय आकृतियाँ देखने को मिलती हैं। इस शोध का उद्देश्य ऐपन कला के डिजाइनों की टेक्सटाइल उद्योग में उपयोगिता और उनके व्यावसायिक और सांस्कृतिक महत्व का विश्लेषण करना है। ऐपण कला के पारंपरिक तत्वों को वस्त्रों के डिजाइनों में शामिल करने से न केवल इस कला को नया जीवन मिला है, बल्कि इसे वैश्विक स्तर पर पहचान भी मिली है। इस शोध में ऐपण कला के पारंपरिक डिजाइनों का विस्तृत अध्ययन किया गया है, और यह देखा गया है कि कैसे इन डिजाइनों का उपयोग आधुनिक वस्त्र निर्माण में किया जा रहा है। वस्त्रों पर ऐपण के रूपांकनों का प्रयोग उन्हें विशिष्टता और लोक–परंपरा से जुड़ा हुआ बनाता है। ऐपण डिजाइनों की सादगी और आकर्षकता ने फैशन उद्योग में नए आयाम जोड़े हैं, जिससे उत्तराखंड की यह पारंपरिक कला देश और विदेश में प्रसिद्ध हो रही है। शोध से यह निष्कर्ष निकला है कि ऐपण कला का टेक्सटाइल डिजाइन में प्रयोग न केवल सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखने में सहायक है, बल्कि इससे स्थानीय कलाकारों को रोजगार के नए अवसर भी प्राप्त हो रहे हैं। इसके साथ ही, यह कला अब स्थानीय बाजार से बढ़कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी जगह बना रही है। अतः, ऐपण कला का टेक्सटाइल डिजाइन में उपयोग उत्तराखंड की सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखते हुए एक सशक्त आर्थिक और सांस्कृतिक योगदान साबित हो रहा है।

मुख्य शब्द – लोक कला, वस्त्रकला, सामंजस्य, अन्तःसम्बन्ध, लोक मौलिकता आदि

प्रस्तावना–

उत्तराखंड की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर में लोक कलाओं का विशेष स्थान है। इन लोक कलाओं में 'ऐपण' एक महत्वपूर्ण कला रूप है, जिसका उपयोग मुख्य रूप से धार्मिक और सांस्कृतिक अनुष्ठानों में होता रहा है। ऐपण की विशिष्ट शैली और अद्वितीय डिजाइन इसे अन्य लोक कलाओं से अलग करते हैं। वर्तमान समय में, ऐपण कला का उपयोग केवल धार्मिक या पारंपरिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आधुनिक जीवन शैली और डिजाइन के विभिन्न क्षेत्रों में भी अपनी जगह बना रहा है। विशेषकर टेक्सटाइल डिजाइन में ऐपण कला के तत्वों का समावेश, इसे नए आयाम प्रदान करता है। इस शोध पत्र का उद्देश्य उत्तराखंड की लोक कला ऐपण का टेक्सटाइल डिजाइन में उपयोगिता का विश्लेषण

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

करना है। पहाड़ी क्षेत्रों में विकसित इस कला का महत्व न केवल धार्मिक और सामाजिक आयोजनों में है, बल्कि यह राज्य की सांस्कृतिक पहचान को भी गहरे रूप से परिभाषित करती है। लोक कला के रूप में ऐपण के महत्व को समझने के लिए इसका सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक संदर्भ बेहद महत्वपूर्ण है।

लोक कला किसी भी समाज की सांस्कृतिक धरोहर का दर्पण होती है। यह न केवल समुदाय की परंपराओं, आस्थाओं और जीवनशैली को व्यक्त करती है, बल्कि समाज के सामूहिक दृष्टिकोण और मान्यताओं को भी उजागर करती है। ऐपण कला का जन्म उत्तराखंड की धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं से जुड़ा हुआ है, और यह कला पीढ़ियों से महिलाओं द्वारा संरक्षित की गई है। यह न केवल घरों की सजावट का माध्यम है, बल्कि शुभता, सौंदर्य और आस्था का प्रतीक भी है।

इस शोध का उद्देश्य उत्तराखंड की इस पारंपरिक कला को आधुनिक टेक्सटाइल डिजाइन में उपयोग करने की संभावनाओं और उपयुक्तता का विश्लेषण करना है। आज के समय में टेक्सटाइल उद्योग न केवल फैशन और वस्त्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, बल्कि इसमें सांस्कृतिक और पारंपरिक कलाओं को समाहित करने की बढ़ती मांग भी हो रही है। यह शोध इस बात पर केंद्रित होगा कि कैसे ऐपण कला की परंपरागत शैली और डिजाइन को टेक्सटाइल डिजाइन में समाहित किया जा सकता है, जिससे दोनों ही क्षेत्र समृद्ध हो सकें और स्थानीय कला को वैश्विक मंच पर पहचान मिल सके।

इस प्रस्तावित शोध में निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं पर ध्यान दिया गया है—

ऐपण कला का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ में ऐपण कला की उत्पत्ति, इसके धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व, और इसके पारंपरिक उपयोगों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। टेक्सटाइल डिजाइन की आधुनिक तकनीकों और रुझानों को समझने के साथ—साथ इसमें पारंपरिक कलाओं के समावेश के विभिन्न तरीकों की चर्चा की गयी है। ऐपण कला के रूपांकन और उनके टेक्सटाइल डिजाइन में संभावित उपयोग किए जाने वाले विभिन्न डिजाइन, जैसे 'मांडल', 'सूर्य', 'शंख', और 'फूल' आदि के रूपांकन और उनके टेक्सटाइल डिजाइन में उपयोग की संभावनाओं का विश्लेषण किया गया है। ऐपण कला और टेक्सटाइल के समागम से उत्पन्न व्यापारिक और सांस्कृतिक संभावनाएँ डिजाइनों के व्यावसायिक उपयोग और इसे एक प्रोडक्ट के रूप में विकसित करने की संभावनाओं पर विचार किया गया है । इस शोध का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य स्थानीय कारीगरों और कलाकारों को सशक्त बनाना है, जो इस पारंपरिक कला को जीवित रखे हुए हैं।

ऐपण कला का परिचय —

ऐपण उत्तराखंड की प्राचीन लोक कला है, जिसे मुख्य रूप से भूमि, दीवारों, और दरवाजों पर विभिन्न पारंपरिक अनुष्ठानों के दौरान बनाया जाता है। यह कला चावल के आटे या हल्दी से बनाए गए पेस्ट से बनाई जाती है, और इसमें ज्यामितीय और प्रतीकात्मक आकृतियाँ होती हैं। ऐपण में आमतौर पर देवी—देवताओं के चित्र, वृत्त, त्रिकोण, और अन्य धार्मिक प्रतीकों का चित्रण किया जाता है। इस कला का महत्व धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण है।[1]

[1]बिष्ट, एस) .2019). **ऐपन कलाउत्तराखंड की लोक चित्रकला का टेक्सटाइल डिज़ाइन में योगदान :.** मसूरी .हिमालय प्रकाशन :148पृष्ठ.

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

ऐपण शब्द संस्कृत शब्द लेपना से लिया गया है , जिसका अर्थ है प्लास्टर। ऐपण कला की उत्पत्ति उत्तराखंड के अल्मोड़ा से हुई, जिसकी स्थापना चंद वंश के शासनकाल के दौरान हुई थी। यह कुमाऊं क्षेत्र में चंद वंश के शासनकाल के दौरान फला–फूला।

ऐपण कला के डिजाइन और रूपांकन समुदाय की मान्यताओं और प्रकृति के विभिन्न पहलुओं से प्रेरित हैं। कुछ सामान्य विषय हैं देवी–देवता, जानवर, पौधे, फूल, ज्यामितीय आकृतियाँ, प्रतीक आदि।

ऐपण कला भारत के विभिन्न भागों में पाई जाने वाली फर्श और दीवार चित्रकला के अन्य रूपों के समान है, जैसे बंगाल और असम में अल्पना, बिहार और उत्तर प्रदेश में अरिपन, राजस्थान और मध्य प्रदेश में मांडणा, गुजरात और महाराष्ट्र में रंगोली, दक्षिण भारत में कोलम, आंध्र प्रदेश में मुग्गू एवं तेलुगु भाषा में भुग्गुल, ओडिशा में चिता, झोटी और मुरुजा।

हालांकि, ऐपण कला को जो बात खास बनाती है, वह यह है कि इसे हमेशा ईंट–लाल दीवार या फर्श पर बनाया जाता है, जिसे सौभाग्य और उर्वरता का प्रतीक भी माना जाता है। ईंट–लाल रंग गेरू और पानी के मिश्रण को लगाने से प्राप्त होता है। असल में यह कला चावल के आटे से बने सफेद पेस्ट से बनाई जाती है। पेस्ट को दाहिने हाथ की आखिरी तीन उंगलियों से लगाया जाता है।

ऐपण कला ज्यादातर महिलाओं द्वारा की जाती है जो इसे अपनी माताओं या सास से सीखती हैं। यह कुमाऊँनी संस्कृति और विरासत के एक हिस्से के रूप में पीढ़ियों से चली आ रही है।[2]

ऐपण कला का महत्व–

ऐपण कला सिर्फ सौंदर्य अभिव्यक्ति ही नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक अभिव्यक्ति भी है। इसे देवताओं का आशीर्वाद पाने और बुरी शक्तियों को दूर भगाने के लिए भक्ति और श्रद्धा के साथ किया जाता है।

प्रत्येक डिजाइन या आकृति का एक विशिष्ट अर्थ और उद्देश्य होता है।[3] उदाहरण के लिए :

स्वस्तिक : यह शुभता, समृद्धि, शांति और सद्भाव का प्रतीक है। यह बाधाओं को दूर करने वाले भगवान गणेश से भी जुड़ा हुआ है।

कमल : यह पवित्रता, सुंदरता, ज्ञान और उर्वरता का प्रतीक है। यह धन की देवी लक्ष्मी से भी जुड़ा हुआ है।

तारा : यह प्रकाश, मार्गदर्शन, आशा और ज्ञान का प्रतीक है। यह विद्या की देवी सरस्वती से भी जुड़ा हुआ है।

दीया : यह रोशनी, ज्ञान, आनंद और जीवन का प्रतीक है। यह प्रकाश के देवता भगवान शिव से भी जुड़ा हुआ है।

पैर : ये सम्मान, कृतज्ञता, सेवा और भक्ति के प्रतीक हैं। ये विभिन्न देवी–देवताओं से भी जुड़े हैं, जिनकी पूजा ऐपण पर पैर रखकर की जाती है।

ऐपण कला विभिन्न अवसरों और समारोहों के अनुसार की जाती है। उनमें से कुछ हैं:

गणेश चतुर्थी : यह भगवान गणेश के जन्मदिन के उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला त्यौहार है। ऐपण गणेश के चेहरे या सूंड के साथ स्वस्तिक और फूलों की आकृति बनाकर बनाए जाते हैं।

मकर संक्रांति : यह त्यौहार सूर्य के मकर राशि में प्रवेश करने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। ऐपण सूर्य या सितारों के साथ स्वस्तिक और फूलों के साथ बनाए जाते हैं।

---

[2]बिष्ट, एस) .2019). **ऐपन कलाउत्तराखंड की लोक चित्रकला का टेक्सटाइल डिज़ाइन में योगदान :.** मसूरी .हिमालय प्रकाशन :148पृष्ठ.

[3]बिष्ट, एस) .2019). **ऐपन कलाउत्तराखंड की लोक चित्रकला का टेक्सटाइल डिज़ाइन में योगदान :.** मसूरी .हिमालय प्रकाशन :148पृष्ठ.

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

महाशिवरात्रि : यह भगवान शिव को सर्वोच्च शक्ति के रूप में सम्मानित करने का त्यौहार है। ऐपण शिव के त्रिशूल, साँप या आँख के रूपांकनों के साथ स्वस्तिक और फूलों के साथ बनाए जाते हैं।

लक्ष्मी पूजन : यह एक ऐसा त्यौहार है जिसमें धन और समृद्धि के स्रोत के रूप में देवी लक्ष्मी की पूजा की जाती है। ऐपण लक्ष्मी के पैरों, कमल या सिक्कों के साथ स्वस्तिक और फूलों के रूपांकनों के साथ बनाए जाते हैं।[4]

ऐपण कला के प्रकार–

ऐपण कला को माध्यम, स्थान और उद्देश्य के आधार पर विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है। कुछ सामान्य प्रकार इस प्रकार हैं:

चौकी : यह लकड़ी का एक मंच होता है जिसका उपयोग पूजा या अनुष्ठान के दौरान मूर्तियाँ या प्रसाद रखने के लिए किया जाता है। चौकियों को ऐपण से सजाया जाता है जिसमें प्रत्येक अवसर के लिए विशिष्ट डिजाइन होते हैं। उदाहरण के लिए, सरस्वती चौकी, चामुंडा हस्त चौकी, नव दुर्गा चौकी, शिव या शिवार्चन पीठ, आदि।

पट्टा या थापा : यह एक दीवार या कपड़ा है जिसका उपयोग पूजा या अनुष्ठान के दौरान ऐपण प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। पट्टा या थापा को भी ऐपण से सजाया जाता है जिसमें प्रत्येक अवसर के लिए विशिष्ट डिजाइन होते हैं। उदाहरण के लिए, ज्योति पट्टा, दुर्गा थापा, लक्ष्मी यंत्र, आदि।

पिछौरा : यह एक दुपट्टा या स्कार्फ है जिसे महिलाएं शादी या त्यौहारों के दौरान पहनती हैं। पिछौरा को ऐपण से भी सजाया जाता है जिसमें स्वस्तिक, कमल, सितारे आदि शुभ डिजाइन होते हैं।

दिकारा : यह मिट्टी की मूर्ति है जो हरेला के त्यौहार के दौरान बनाई जाती है। दिकारा को ऐपण से भी सजाया जाता है जिसमें पक्षियों, जानवरों, पौधों आदि जैसे प्राकृतिक डिजाइन होते हैं।

ऐपण की डिजाइन प्रक्रिया और उसका विकास–

ऐपण की डिजाइन प्रक्रिया अत्यधिक सरल है, लेकिन इसका सौंदर्यबोध और प्रतीकात्मक अर्थ इसे अद्वितीय बनाते हैं। परंपरागत रूप से, ऐपण की डिजाइन चावल के पेस्ट से बनाई जाती है। पहले लाल मिट्टी का लेप आंगन या दीवार पर लगाया जाता है, और उसके बाद सफेद रंग से रूपांकन उकेरे जाते हैं। यह प्रक्रिया सरल होने के बावजूद अत्यधिक कलात्मकता की मांग करती है, और इसके प्रत्येक रूपांकन का अपना धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व होता है।

आधुनिक समय में, इस कला के डिजाइन को कंप्यूटर आधारित डिजाइन सॉफ्टवेयर और डिजिटल प्रिंटिंग तकनीकों के माध्यम से भी विकसित किया जा रहा है। इस विकास ने ऐपन की पारंपरिक कला को न केवल सुरक्षित रखने में सहायता की है, बल्कि इसे नए स्वरूपों में प्रस्तुत करने का मार्ग भी प्रशस्त किया है।

ऐपण की कला और सौंदर्यशास्त्र–

ऐपण की विशिष्ट शैली और उसके सौंदर्यशास्त्र उसे अन्य लोक कलाओं से अलग करते हैं। इसकी ज्यामितीय आकृतियाँ, धार्मिक प्रतीक और प्राकृतिक रूपांकनों का संयोजन इसे अद्वितीय बनाता है। ऐपण के डिजाइन में उपयोग किए जाने वाले रूपांकनों में स्पष्टता, संतुलन और समरूपता दिखाई देती है, जो इसे एक अद्वितीय सौंदर्यबोध प्रदान करती है। इसकी सरलता और आकर्षकता इसे आम लोगों के बीच लोकप्रिय बनाती है, जो इसे हर आयु वर्ग में अपनाते हैं।[5]

---

[4]पांडे, ए) .2018). **टेक्सटाइल डिज़ाइन और उत्तराखंड की लोककला.** हरिद्वार .गंगा पब्लिकेशन :142पृष्ठ.

[5]पांडे, ए) .2018). **टेक्सटाइल डिज़ाइन और उत्तराखंड की लोककला.** हरिद्वार .गंगा पब्लिकेशन :142पृष्ठ.

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

इस कला के ज्यामितीय रूप और प्रतीकात्मक आकृतियाँ कपड़ों के डिजाइन और सजावट के लिए उपयुक्त हैं। ऐपण की पारंपरिक डिजाइन, जैसे स्वस्तिक, घंटियाँ, लक्ष्मी पदचिह्न, ज्यामितीय रूपांकनों के साथ–साथ प्राकृतिक आकृतियाँ, टेक्सटाइल इंडस्ट्री के लिए प्रेरणा स्रोत बन रही हैं। इन रूपांकनों को कपड़ों, परिधानों और अन्य वस्त्रों में संलग्न करने से न केवल पारंपरिक संस्कृति का पुनर्जीवन हो रहा है, बल्कि फैशन और वस्त्र डिजाइन के क्षेत्र में भी नए आयाम खुल रहे हैं।

ऐपण का धार्मिक और सामाजिक संदर्भ–

उत्तराखंड में ऐपण को विशेष रूप से धार्मिक और सामाजिक उत्सवों के दौरान प्रयोग किया जाता है। इसका उपयोग घरों की सजावट, विशेष रूप से दरवाजों, आंगनों, मंदिरों, और पूजा स्थलों में किया जाता है। इसे बनाने के लिए चावल के आटे (अरिपन) या गेहूं के पेस्ट का प्रयोग किया जाता है। पारंपरिक रूप से, इसे लाल मिट्टी के आधार पर सफेद रंग से बनाया जाता है, जिससे यह कला अत्यधिक आकर्षक और विशिष्ट दिखती है। ऐपण के प्रमुख डिजाइन और प्रतीक धार्मिक महत्त्व रखते हैं, जैसे स्वस्तिक, लक्ष्मी पदचिह्न, सूर्य और घंटियाँ। ये प्रतीक न केवल धार्मिक मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, बल्कि शुभता और सौभाग्य के प्रतीक भी होते हैं।[6]

लोक मान्यताओं के अनुसार, ऐपण बनाने से घर में सुख–समृद्धि आती है और नकारात्मक शक्तियों का नाश होता है। विवाह, जन्म, धार्मिक अनुष्ठानों और त्योहारों जैसे शुभ अवसरों पर ऐपण का विशेष महत्व होता है। यह कला न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीकों को दर्शाती है, बल्कि महिलाओं की रचनात्मकता और सृजनशीलता का भी प्रतीक है।

टेक्सटाइल डिजाइन में ऐपन कला का समावेश–

टेक्सटाइल डिजाइन में लोक कलाओं का समावेश सदियों से होता आ रहा है। विशेष रूप से ऐपण की बात करें, तो इसकी ज्यामितीय डिजाइन और सरल परंतु प्रभावशाली आकृतियाँ टेक्सटाइल डिजाइन के लिए बेहद उपयुक्त मानी जाती हैं। टेक्सटाइल डिजाइन में ऐपण का उपयोग विभिन्न प्रकार से किया जा सकता है, जैसे कि साड़ी, दुपट्टा, कुर्ता, और अन्य कपड़ों के डिजाइन में, या फिर होम डेकोर जैसे बेडशीट, कुशन, पर्दे आदि में। ऐपण कला के विशिष्ट तत्वों को कपड़ों के डिजाइन में शामिल कर उन्हें एक नई पहचान दी जा सकती है।[7] छपाई और कढ़ाई के साथ भारतीय लोक कलाएं नए डिजाइन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उपभोक्ताओं की बढ़ती मांगों के लिए फैशन उद्योग में डिजाइन, रंग, शैली और तकनीक के संबंध में संशोधन की आवश्यकता है। इसलिए ऐपण के काम के लिए उत्तराखंड की लोक कला (ऐपण) का उपयोग करके एक डिजाइन पूल विकसित करने का प्रयास किया गया। यह कपड़ों पर अनुकूलित पारंपरिक रूपांकनों का उपयोग करने और सुंदर पारंपरिक लोक कला को संरक्षित करने का अवसर भी प्रदान करता है। ऐपण रूपांकनों को केंद्र डिजाइन, सीमा डिजाइन और बूटी डिजाइन के लिए अनुकूलित किया गया था। बैग, पेंसिल पर्स और मोबाइल होल्डर जैसे लेखों के लिए उनकी उपयुक्तता को ध्यान में रखते हुए कुल तीस रूपांकनों/डिजाइनों को विकसित किया गया था। ऐपण कार्य के लिए विकसित डिजाइनों की उपयुक्तता का पता लगाने के लिए तीस निर्णायकों के पैनल

[6] पांडे, ए) .2018). **टेक्सटाइल डिज़ाइन और उत्तराखंड की लोककला.** हरिद्वार .गंगा पब्लिकेशन :142पृष्ठ.

[7] पांडे, ए) .2018). **टेक्सटाइल डिज़ाइन और उत्तराखंड की लोककला.** हरिद्वार .गंगा पब्लिकेशन :142पृष्ठ.

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

द्वारा प्रत्येक श्रेणी में दो सर्वश्रेष्ठ डिजाइनों के चयन के लिए सभी विकसित डिजाइनों का दृश्य मूल्यांकन किया गया ।[8] इस प्रकार प्रत्येक लेख के लिए पांच व्यवस्थाओं की तैयारी के लिए कुल छह रूपांकनों का चयन किया गया। सादा लाल पॉपलिन और बचे हुए कपड़ों का इस्तेमाल करके उत्पाद तैयार किए गए। अंत में चयनित व्यवस्थाओं का उपयोग करके उत्पाद तैयार किए गए और इन तैयार उत्पादों को उपभोक्ताओं द्वारा बहुत सराहा गया।[9]

ऐपण की ज्यामितीय आकृतियाँ और टेक्सटाइल डिजाइन–

ऐपण की ज्यामितीय आकृतियाँ जैसे वृत्त, त्रिकोण, और आयत, टेक्सटाइल डिजाइन के लिए बेहद आकर्षक होती हैं। इन आकृतियों को लाल और सफेद रंगों से अलग–अलग बनावटों के साथ मिलाकर कपड़ों में नई डिजाइन संभावनाएँ उत्पन्न की जा सकती हैं। उदाहरण के लिए, साड़ियों और दुपट्टों पर ऐपन की आकृतियों का उपयोग बहुत ही प्रभावी और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध डिजाइन तैयार किया जा रहा है। इसके साथ ही, इन आकृतियों को सिल्क, कॉटन, और वूल जैसे विभिन्न कपड़ों पर प्रिंट या एम्ब्रॉयडरी के रूप में इस्तेमाल किया जाने लगा है। ऐपण की आकृतियाँ केवल सुंदरता का प्रतीक नहीं होतीं, बल्कि वे धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताओं से भी जुड़ी होती हैं। उदाहरण के लिए, ऐपण में प्रायः 'स्वस्तिक', 'ओम', और 'शंख' जैसे प्रतीकों का उपयोग किया जाता है। ये प्रतीक न केवल सौंदर्य की दृष्टि से आकर्षक होते हैं, बल्कि इनका एक धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व भी होता है। टेक्सटाइल डिजाइन में इन प्रतीकों का समावेश कपड़ों को न केवल सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाता है, बल्कि उन्हें एक गहरा धार्मिक और भावनात्मक अर्थ भी प्रदान करता है।[10]

ऐपण और टेक्सटाइल डिजाइन का संबंध–

आधुनिक युग में टेक्सटाइल डिजाइन का क्षेत्र लगातार विकसित हो रहा है। इसमें पारंपरिक कलाओं और डिजाइनों को नए सृजनात्मक और व्यावसायिक रूपों में अपनाने की प्रवृत्ति देखी जा रही है। ऐपण कला का उपयोग टेक्सटाइल डिजाइन में विशेष रूप से महत्वपूर्ण साबित हो रहा है। इसकी ज्यामितीय संरचनाएँ और प्रतीकात्मक अर्थ कपड़ों की सजावट और डिजाइन के लिए अत्यधिक उपयुक्त हैं। टेक्सटाइल डिजाइन के क्षेत्र में ऐपण का उपयोग विभिन्न रूपों में हो रहा है, जैसे ब्लॉक प्रिंटिंग, स्क्रीन प्रिंटिंग, कढ़ाई, और बुनाई। कपड़ों पर ऐपण की डिजाइन के उपयोग से पारंपरिक और आधुनिक फैशन का अनूठा संगम तैयार किया जा रहा है। इस कला के माध्यम से पारंपरिक डिजाइनों को पुनर्जीवित किया जा रहा है और साथ ही आधुनिक परिधानों में सांस्कृतिक धरोहर की झलक दिखाई जा रही है।[11]

[8]पांडे, ए) .2018). **टेक्सटाइल डिज़ाइन और उत्तराखंड की लोककला.** हरिद्वार .गंगा पब्लिकेशन :142पृष्ठ.
[9]पांडे, ए) .2018). **टेक्सटाइल डिज़ाइन और उत्तराखंड की लोककला.** हरिद्वार .गंगा पब्लिकेशन :142पृष्ठ.
[10]पांडे, ए) .2018). **टेक्सटाइल डिज़ाइन और उत्तराखंड की लोककला.** हरिद्वार .गंगा पब्लिकेशन :142पृष्ठ.
[11]पांडे, ए) .2018). **टेक्सटाइल डिज़ाइन और उत्तराखंड की लोककला.** हरिद्वार .गंगा पब्लिकेशन :142पृष्ठ.

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

चित्र संख्या –१ चादर में ऐपण

चित्र संख्या –2 चुनरी एवं साडी में ऐपण

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

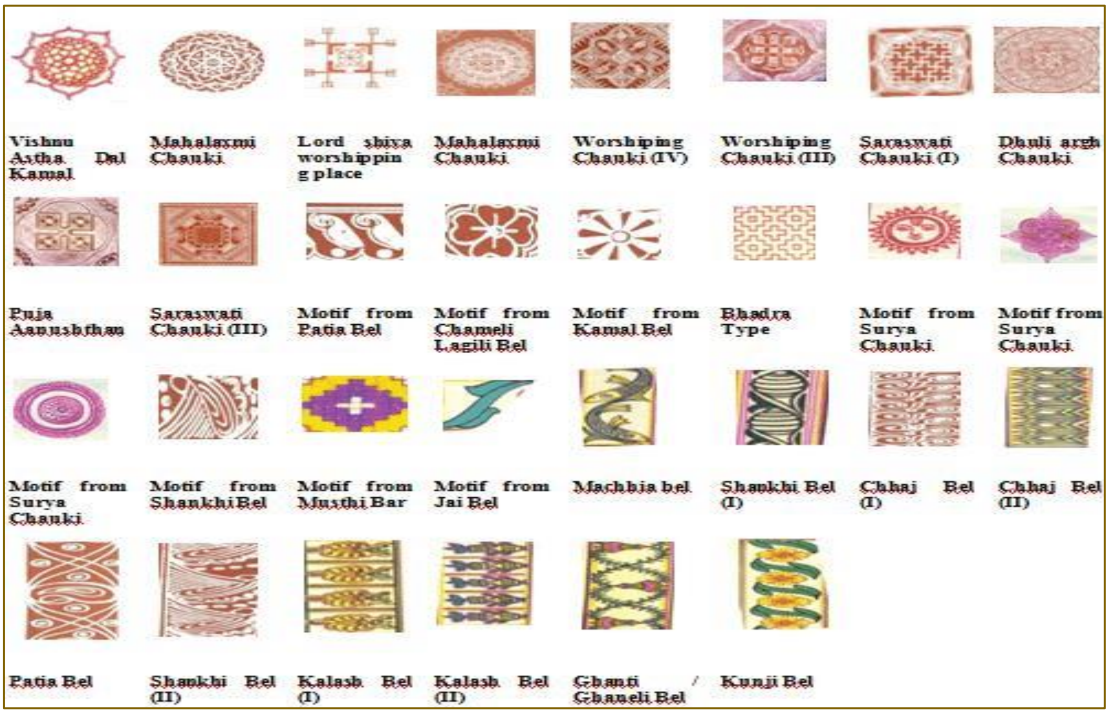

चित्र संख्या –3 ऐपण आकृतियाँ

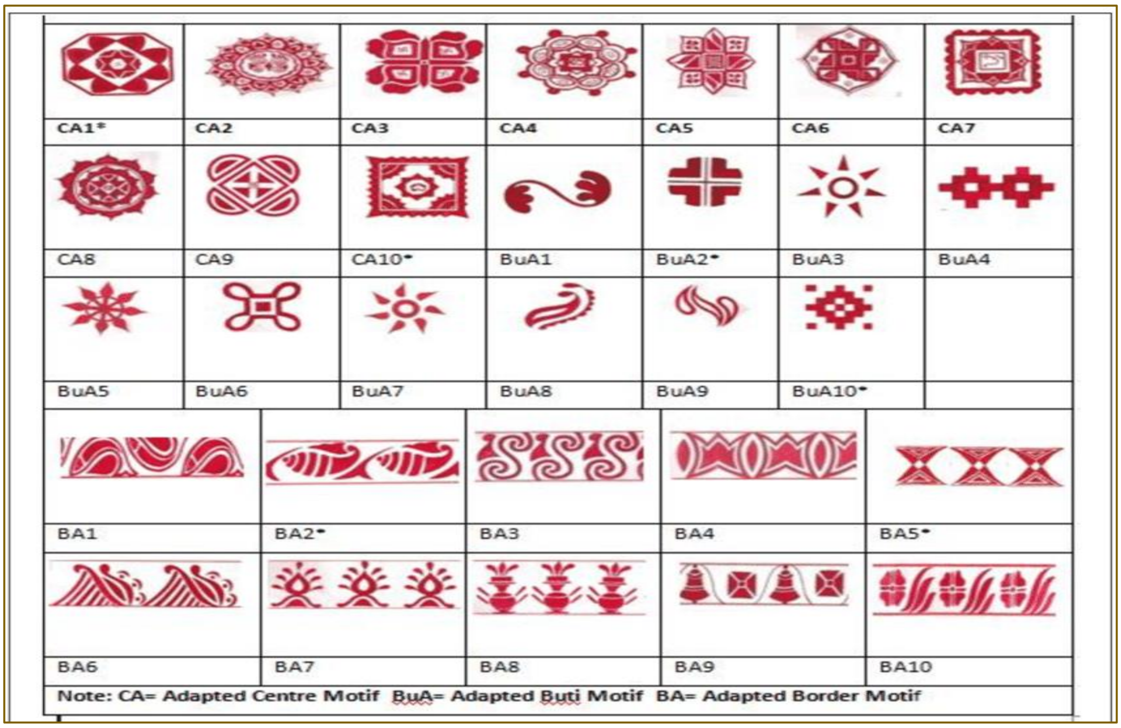

चित्र संख्या –4 ऐपण आकृतियाँ

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

ऐपण कला का आधुनिक सदर्भ–

पारंपरिक कला होने के बावजूद, ऐपण का उपयोग अब केवल धार्मिक अनुष्ठानों और उत्सवों तक सीमित नहीं है। आधुनिक समय में, इसे विभिन्न व्यावसायिक और सजावटी उद्देश्यों के लिए भी अपनाया जा रहा है। विशेष रूप से टेक्सटाइल इंडस्ट्री में, ऐपण के डिजाइनों का उपयोग कपड़ों की सजावट में बढ़ रहा है। यह कपड़ा उद्योग के लिए न केवल एक रचनात्मक प्रेरणा है, बल्कि यह उत्तराखंड की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने और उसे आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत करने का भी एक महत्वपूर्ण साधन है।

ऐपण के डिजाइनों का उपयोग विभिन्न प्रकार के वस्त्रों में किया जा रहा है, जैसे साड़ी, कुर्ता, स्कार्फ, शॉल, और अन्य परिधानों में। इसके अलावा, ऐपण कला को गृह सज्जा वस्त्रों, जैसे बिस्तर की चादरों, परदों, तकियों के कवर में भी अपनाया जा रहा है। इस प्रकार, ऐपण कला ने अपनी पारंपरिक सीमाओं को पार करते हुए फैशन और गृह सज्जा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है।[12]

ऐपण और समकालीन फैशन उद्योग–

आज के दौर में फैशन उद्योग में परंपरागत लोक कलाओं का एक नया रूप देखा जा रहा है। ऐपण जैसी कला, जो पहले केवल धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजनों का हिस्सा थी, अब समकालीन फैशन डिजाइनरों द्वारा अपनाई जा रही है। ऐपण की अनूठी डिजाइन और रंग संयोजन इसे आधुनिक फैशन में भी प्रासंगिक बनाते हैं। कई डिजाइनर अब पारंपरिक ऐपण आकृतियों का उपयोग कपड़ों और एक्सेसरीज में कर रहे हैं। इससे न केवल लोक कला का संरक्षण हो रहा है, बल्कि इसे वैश्विक पहचान भी मिल रही है।[13]

टेक्सटाइल उद्योग में ऐपण कला की व्यावसायिक उपयोगिता–

टेक्सटाइल उद्योग में ऐपण की व्यावसायिक उपयोगिता बढ़ती जा रही है। ऐपण आधारित डिजाइन वाले कपड़े लोकल और ग्लोबल मार्केट दोनों में लोकप्रिय हो रहे हैं। लोक कला के प्रति बढ़ती रुचि और पारंपरिक डिजाइनों के प्रति लोगों की बढ़ती जागरूकता के कारण, ऐपण की मांग भी बढ़ रही है। यह न केवल शहरी क्षेत्रों में, बल्कि ग्रामीण कारीगरों के लिए भी एक नया रोजगार का साधन बन सकता है। ऐपण आधारित कपड़े और होम डेकोर वस्तुएं हस्तशिल्प और ग्रामीण उद्योगों के विकास में भी मददगार साबित हो रही हैं। टेक्सटाइल डिजाइन के माध्यम से ऐपण जैसी लोक कला का संरक्षण और संवर्धन संभव है। जब ऐपण के पारंपरिक डिजाइन को कपड़ों और अन्य वस्त्रों में उपयोग किया जाता है, तो यह कला न केवल जीवित रहती है, बल्कि इसे एक नया आयाम भी मिलता है। इसके साथ ही, टेक्सटाइल डिजाइनरों द्वारा ऐपण का नवाचारपूर्ण उपयोग, इस कला को नई पीढ़ी तक पहुँचाने में भी सहायक हो सकता है। यह पारंपरिक और आधुनिक डिजाइन के संगम का एक अद्भुत उदाहरण है।[14]

[12]पांडे, ए) .2018). **टेक्सटाइल डिज़ाइन और उत्तराखंड की लोककला.** हरिद्वार .गंगा पब्लिकेशन :238 पृष्ठ.
[13]पांडे, ए) .2018). **टेक्सटाइल डिज़ाइन और उत्तराखंड की लोककला.** हरिद्वार .गंगा पब्लिकेशन :238 पृष्ठ.
[14]पांडे, ए) .2018). **टेक्सटाइल डिज़ाइन और उत्तराखंड की लोककला.** हरिद्वार .गंगा पब्लिकेशन :238 पृष्ठ.

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

निष्कर्ष–

उत्तराखंड की लोक कला ऐपण न केवल सांस्कृतिक धरोहर है, बल्कि यह आधुनिक टेक्सटाइल डिजाइन में भी एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इस कला की विशिष्टता और प्रतीकात्मक महत्व इसे फैशन और टेक्सटाइल उद्योग में एक अनूठी पहचान दिलाते हैं। यह राज्य की धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न हिस्सा है। इसके प्रतीकात्मक रूपांकनों और ज्यामितीय आकृतियों ने इसे एक विशिष्ट पहचान दी है, जिसे अब टेक्सटाइल डिजाइन में भी अपनाया जा रहा है। टेक्सटाइल इंडस्ट्री में ऐपण के उपयोग ने पारंपरिक कला को आधुनिक संदर्भ में पुनर्जीवित किया है और इसे एक वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया है। ऐपण के माध्यम से न केवल उत्तराखंड की संस्कृति को संरक्षित किया जा रहा है, बल्कि इसे एक नई दिशा भी दी जा रही है। ऐपण के तत्वों का सही और सृजनात्मक उपयोग न केवल इस कला के संरक्षण में सहायक हो रही है, बल्कि इससे व्यावसायिक और आर्थिक लाभ भी उठाए जा सकते हैं। ऐपण कला का फैशन में बढ़ता उपयोग इस बात का प्रतीक है कि परंपरागत लोक कलाएँ सिर्फ संस्कृति और धार्मिक आयोजनों तक सीमित नहीं हैं। उनका आधुनिकरण करके इन्हें एक नई पहचान दी जा सकती है। इस प्रकार, ऐपण और टेक्सटाइल डिजाइन का संगम, पारंपरिक लोक कला के संवर्धन और समकालीन डिजाइन की नई संभावनाओं का सृजन करता है। उत्तराखंड की ऐपण कला ने अपनी मौलिकता को बनाए रखते हुए फैशन में एक अनोखी जगह बनाई है, जो सांस्कृतिक धरोहर को नए रूप में प्रस्तुत करने का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इतना ही नहीं बल्कि इससे स्थानीय कलाकारों को रोजगार के नए अवसर भी प्राप्त हो रहे हैं। इसके साथ ही, यह कला अब स्थानीय बाजार से बढ़कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी जगह बना रही है। अतः, ऐपण कला का टेक्सटाइल डिजाइन में उपयोग उत्तराखंड की सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखते हुए एक सशक्त आर्थिक और सांस्कृतिक योगदान साबित हो रहा है।[15]

[15]पांडे, ए) .2018). **टेक्सटाइल डिज़ाइन और उत्तराखंड की लोककला.** हरिद्वार .गंगा पब्लिकेशन :238 पृष्ठ.

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

सन्दर्भ–

1. शर्मा, आर. (2015). **उत्तराखंड की ऐपण कलाः एक सांस्कृतिक धरोहर.** दिल्लीः प्रभात प्रकाशन. पृष्ठ 256.

2. पांडे, ए. (2018). **टेक्सटाइल डिजाइन और उत्तराखंड की लोककला.** हरिद्वारः गंगा पब्लिकेशन. पृष्ठ 142

3. शर्मा, आर. (2015). **उत्तराखंड की ऐपन कलाः एक सांस्कृतिक धरोहर.** दिल्लीः प्रभात प्रकाशन. पृष्ठ 106.

4. शर्मा, आर. (2015). **उत्तराखंड की ऐपण कलाः एक सांस्कृतिक धरोहर.** दिल्लीः प्रभात प्रकाशन. पृष्ठ 208.

5. शर्मा, आर. (2015). **उत्तराखंड की ऐपण कलाः एक सांस्कृतिक धरोहर.** दिल्लीः प्रभात प्रकाशन. पृष्ठ 121.

6. नेगी, वी. (2017). **पारंपरिक भारतीय लोक कला और ऐपण.** देहरादूनः उत्तराखंड प्रकाशन. पृष्ठ 312

7. भट्ट, एस. (2019). **उत्तराखंड के पारंपरिक डिजाइनः ऐपण कला और टेक्सटाइल.** देहरादूनः उत्तराखंड कला प्रकाशन. पृष्ठ 233.

8. रावत, के. (2022). **उत्तराखंड की सांस्कृतिक धरोहरः ऐपण और उसका टेक्सटाइल में महत्व.** पिथौरागढ़रू कुमाऊँ प्रकाशन. पृष्ठ 192.

9. बिष्ट, एस. (2019). **ऐपण कलाः उत्तराखंड की लोक चित्रकला का टेक्सटाइल डिजाइन में योगदान.** मसूरीः हिमालय प्रकाशन. पृष्ठ 198.

10. चौहान, पी. (2014). **टेक्सटाइल इंडस्ट्री में भारतीय लोककला का योगदान.** दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट. पृष्ठ 204.

11. तिवारी, आर. (2016). **भारतीय लोककला और टेक्सटाइल डिजाइन में ऐपण की भूमिका.** ऋषिकेशः सरस्वती प्रकाशन. पृष्ठ 211.

12. पांडे, ए. (2018). **टेक्सटाइल डिजाइन और उत्तराखंड की लोककला.** हरिद्वारः गंगा पब्लिकेशन. पृष्ठ 238

13. बिष्ट, एस. (2019). **ऐपन कलाः उत्तराखंड की लोक चित्रकला का टेक्सटाइल डिजाइन में योगदान.** मसूरीः हिमालय प्रकाशन. पृष्ठ 58.

14. सिंह, एम. (2020). **हिमालयी लोक कला का टेक्सटाइल में उपयोगः एक अध्ययन.** अल्मोड़ाः पर्वतीय साहित्य प्रकाशन. पृष्ठ 189.

15. बिष्ट, एस. (2019). **ऐपन कलाः उत्तराखंड की लोक चित्रकला का टेक्सटाइल डिजाइन में योगदान.** मसूरीः हिमालय प्रकाशन. पृष्ठ 148